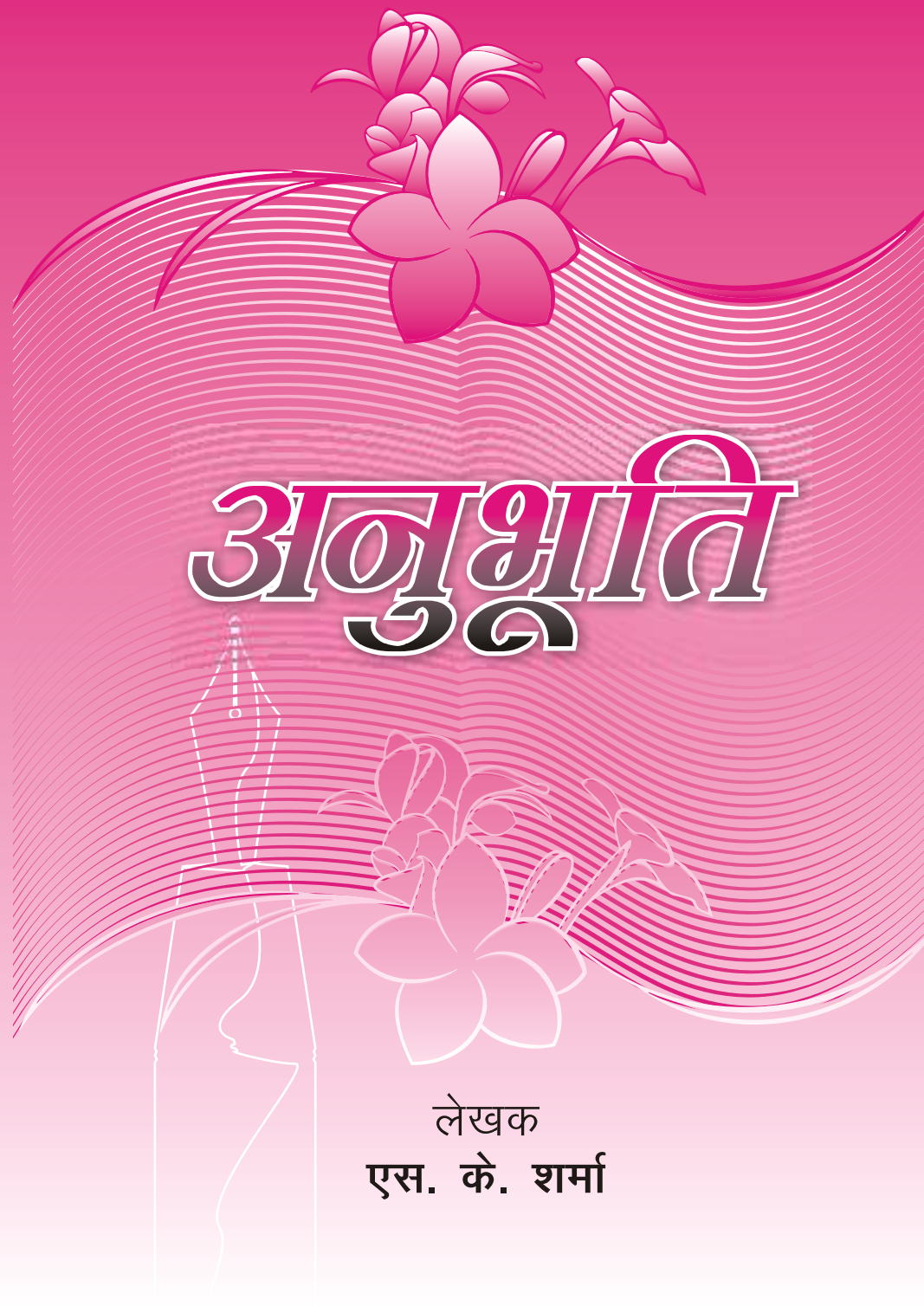

अनुभूति

लेखक
एस. के. शर्मा

Written by:
S K Sharma

Published by:
Rishikul Vidyapeeth
Sonepat, Haryana
Ph 0130-2234374, 2237074 , 2235274
E-mail info@rishikulvidyapeeth.com
Website www.rishikulvidyapeeth.com

Copyright © 2010

All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced, translated, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means, without the prior permission of the publishers.

Printed by:
Datagraph Creations Pvt. Ltd.
203-4-7, Mohan Complex, H-Block Market
Ashok Vihar, Phase-I, Delhi - 110 052
Tele.: 47019171, 47091404, 47091472

अनुभूति

लेखक
एस. के. शर्मा

लेखक की कलम से

एक अध्यापक के रूप में मैंने जो अनुभव किया है, उसे संक्षिप्त रूप में समेटने एवं लिखने का प्रयास किया है। मुझे पता है कि प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में व्यस्त है तथा उसके पास कुछ भी पढ़ने के लिए समय का अभाव है। यदि किसी पाठक महानुभाव ने मेरी किसी एक बात पर भी स्वीकृति देते हुए अपनी गर्दन हिला दी तो मैं अपना प्रयास सफल समझूँगा।

एस. के. शर्मा

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक एक संवेदनशील व्यक्ति हैं। उन्होंने अपने संघर्षपूर्ण प्रशासनिक एवं शिक्षक जीवन में व्यक्ति, समाज, देश, दुनिया, धर्म–कर्म आदि के विषय में जो गहन अनुभूति की है, यह उसी की अभिव्यक्ति है।

सत्य सदैव कड़वा होता है, लेकिन कड़वी औषधि ही अधिक गुणकारी होती है। कबीर की सूक्तियों की तरह "अनुभूति" के कुछ कथन संभवतः परम्परावादियों के गले न उतरें। इसलिए शत–प्रतिशत सहमति की तो आशा नहीं की जा सकती, लेकिन मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक जीवन–पथ से भटके हुए लोगों के लिए मार्गदर्शक, हताश एवं निराश जनों के लिए संजीवनी तथा उत्साही पुरुषों के लिए प्रेरणा का स्रोत सिद्ध होगी।

घनश्याम शर्मा

अनुभूति

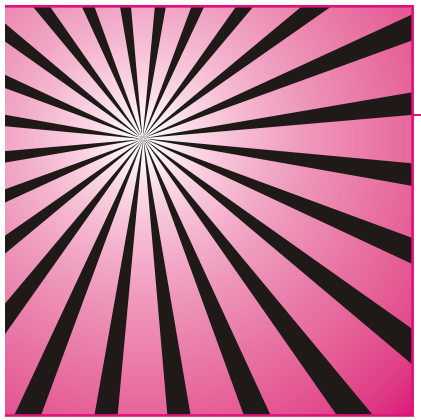

ईश्वर

जो अज्ञात है, परम रहस्य है और केवल अनुभूत है, वही ईश्वर है। संसार ने उसे अनेक रूपों और नामों में कल्पित किया है लेकिन उसके वास्तविक स्वरूप और स्थिति को कोई नहीं जान पाया है।

प्रकृति

प्रकृति रहस्यमयी है तथा उसके समस्त कार्य भी रहस्यपूर्ण हैं। इससे संबंधित ज्ञान के विषय में मनुष्य की स्थिति वैसी ही है जैसी एक प्रसंग में हाथी के आकार के विषय में अंधे व्यक्तियों की दिखाई गई थी। जिस अंधे व्यक्ति ने हाथी का जो अंग छुआ उसने उसका आकार वैसा ही बताया। विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा समय–समय पर निकाले गए निष्कर्ष तभी तक सत्य हैं जब तक दूसरे वैज्ञानिक उनकी काट नहीं खोज लेते। मनुष्य विज्ञान के क्षेत्र में कितनी भी खोज क्यों न कर ले, फिर भी प्रकृति उसके लिए एक रहस्य है और रहस्य ही बनी रहेगी।

संसार

यह पृथ्वी एक विशाल रंगमंच है। इस पर दीर्घकाल से अनवरत एक नाटक खेला जा रहा है। सभी मनुष्य इस नाटक के पात्र एवं दर्शक हैं। जो पात्र जितने अधिक समय तक अधिकाधिक लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है, वह उतना ही सफल अभिनेता है तथा उसी अनुपात में इतिहास का हिस्सा बन जाता है। संसार रूपी यह रंगमंच कर्म प्रधान है। यहाँ मनुष्य के कर्म ही उसकी अमरता और अस्तित्वहीनता के कारण हैं।

धर्म

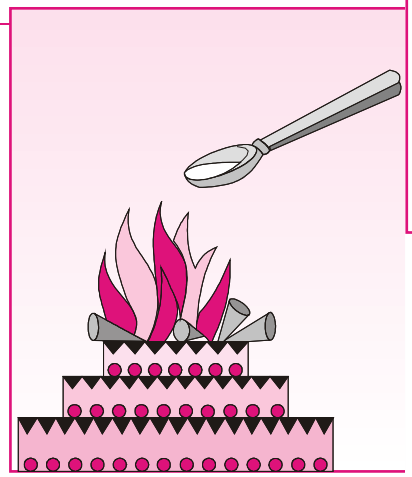

जो कार्य सर्वमान्य और विवाद रहित है तथा जिससे मनुष्य की भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति होती है, वही धर्म है। निर्भय होकर उस कार्य को करना ही धर्मपालन है। अन्य सभी तथाकथित धर्म और सम्प्रदाय तो इस मस्तिष्क के धनी मनुष्य को सीमाओं में बाँधकर रखने के लिए आवश्यकतानुसार समय–समय पर विकसित किए गए हैं। वे सभी मनुष्य की आवश्यकता हो सकते हैं परन्तु अन्तिम सत्य नहीं।

अभ्यास एवं परिश्रम

अभ्यास का जीवन में बहुत महत्त्व है। मनुष्य को अधिक से अधिक मनन, श्रवण तथा प्रवचन करना चाहिए, क्योंकि अभ्यास से इन तीनों में निखार आता है। इसी प्रकार उसे सतत परिश्रम भी करना चाहिए क्योंकि परिश्रम का कोई विकल्प नहीं और यह कभी व्यर्थ भी नहीं जाता। परिश्रमी के पास सभी सम्पदाएँ स्वयं ही आ जाती हैं।

विवेक

जन्म और मृत्यु के बीच का समय भगवान या प्रकृति ने मनुष्य को उसके विवेक पर जीने के लिए दिया है। उसकी बुद्धि एवं विवेक ही उसे अन्य जीव–जन्तुओं से अलग करते हैं अन्यथा, आहार, निद्रा और मैथुनादि में तो वह पशुतुल्य ही है। विवेकहीन व्यक्ति पतित होकर नारकीय जीवन व्यतीत करता है।

क्रियाशीलता

स्वयं में प्रतिदिन कुछ न कुछ नया जोड़िए नहीं तो पीछे हटने के लिए तैयार रहिए, क्योंकि संसार में कोई वस्तु या जीव एक जगह स्थिर नहीं है। या तो आगे बढ़िए अन्यथा स्वयं ही पीछे हट जाओगे। प्रगति–पथ पर तीव्र गति से अग्रसर इस दुनिया के साथ चलने में केवल एक ज्ञानार्थी और पुरुषार्थी ही समर्थ हो सकता है।

जीवन सत्य

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह – इन पाँचों के विषय में मेरी एक नई और व्यावहारिक सोच है। शत्रु कहे जाने वाले इन पाँचों को यदि मनुष्य के अन्दर से निकाल दिया जाए तो उसके अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मैं इनके सन्तुलित एवं सात्विक रूप का पक्षधर हूँ।

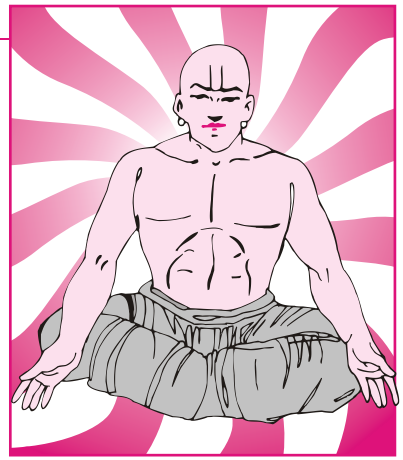

परिवर्तन

समाज में परिवर्तन की स्थिति अपनी पूर्ण गति पर है। प्रत्येक मनुष्य को देश काल एवं स्थिति को भाँपकर परिवर्तन के लिए तैयार रहना चाहिए। सत् कार्य या परिश्रम करके आगे बढ़ना प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है तथा उसे ऐसा अवश्य करना चाहिए।

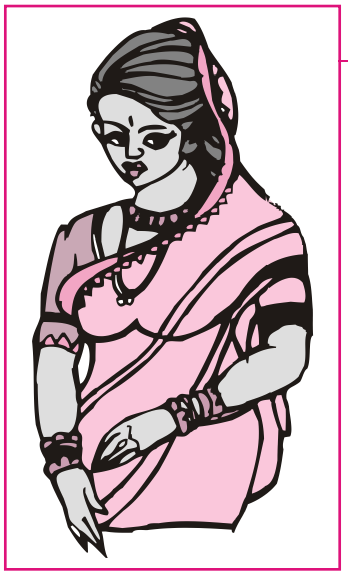

स्त्री

स्त्री ममतामयी तो है लेकिन अतिवादी एवं अड़ियल भी है। पुरुष अपने वादे एवं जुबान से मुकर सकता है लेकिन स्त्री ऐसा बहुत कम करती है। ममता का गुण उसमें विशेष होता है। वह अपनी सन्तान को सर्वाधिक प्रेम करती है, लेकिन यदि संतान भी उसके निजी प्रेम प्रसंग में बाधक बनती है, तो उसे भी वह निर्दयता से मौत के घाट उतार सकती है, फिर अन्य के विषय में तो आप स्वयं ही अनुमान लगा सकते हैं।

संतोष

प्रकृति ने मनुष्य को संतोष नामक एक अमोघ शक्ति दी है। जब कभी भी वह जीवन में हारता है, कोई हानि उठाता है या उसका कोई अनिष्ट हो जाता है तब उससे भी बड़ी हानि और अनिष्ट की कल्पना करके वह संतोष कर लेता है तथा जीने की नई राह निकाल लेता है।

मानव-स्वार्थ

मनुष्य बहुत स्वार्थी होता है। जब उसे किसी कार्य में सफलता प्राप्त होती है तो उसका सारा श्रेय वह स्वयं ले लेता है, परन्तु जब वह असफल होता है तो सारा दोष दूसरों पर या भगवान पर मढ़ देता है।

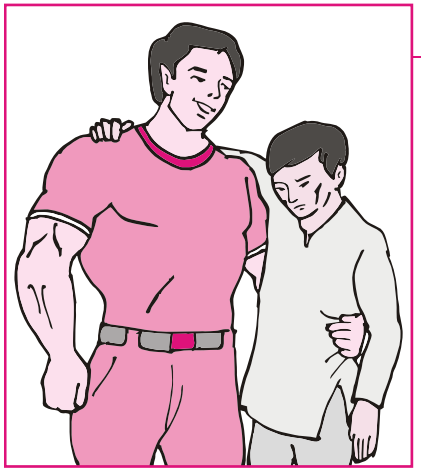

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन से ही मनुष्य दूसरों का हित कर सकता है। रुग्ण व्यक्ति न तो अपना और न ही दूसरों का कोई भला कर सकता है। सभी कर्तव्यों को पूर्ण करने के लिए स्वस्थ शरीर ही एक मात्र साधन है, अतः शरीर को स्वस्थ रखना प्रत्येक मनुष्य का परम धर्म है।

व्यवहार

जिस वस्तु या व्यवहार की आप दूसरे से अपेक्षा करते हैं, वह उचित है या अनुचित, यह जानने के लिए आप उसकी जगह खड़े होकर स्वयं सोच लीजिए, आपको सही उत्तर मिल जाएगा। जो व्यवहार आपको अनुचित लगता है वह दूसरों के लिए कभी भी उचित नहीं हो सकता।

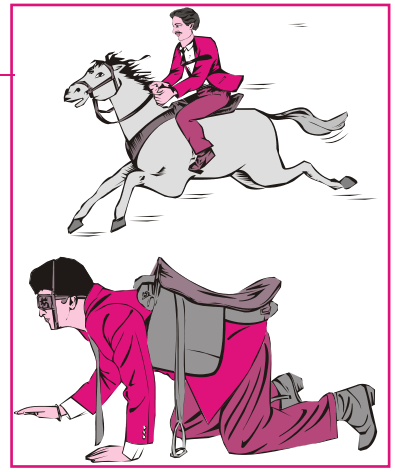

अवसर-लाभ

प्रकृति जीवन में सबको ऊपर उठने का अवसर प्रदान करती है और यह अवसर वह एक नहीं, अनेक बार देती है। यह मनुष्य के हाथ में है कि वह उसका कैसे और कितना लाभ उठाता है। बुद्धिमान व्यक्ति प्रकृति प्रदत्त इस सुअवसर का लाभ उठाकर अपने जीवन को धन्य कर लेते हैं, जबकि मूर्ख और आलसी इसे खोकर पश्चात्ताप की आग में जलते रहते हैं।

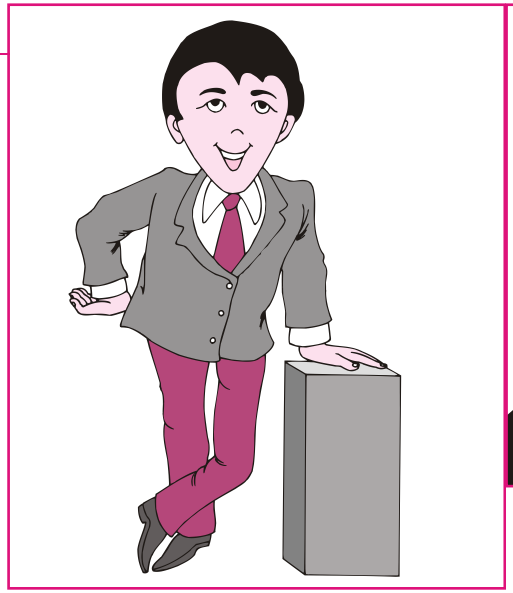

बाल-विकास

माता–पिता एवं शिक्षक अपनी सामर्थ्य के अनुसार बच्चे को उन्नति के शिखर पर ले जाना चाहते हैं, परन्तु इस कार्य में वे एक निश्चित सीमा तक पहुँचकर रुक जाते हैं। एक बच्चा सामान्य सुख–सुविधाओं के अभाव में भी बड़ा होकर आश्चर्यजनक उन्नति करता है लेकिन उसी का अपना बच्चा सभी सुविधाओं और साधनों के होते हुए भी उससे बहुत पीछे या सामान्य से भी बहुत कम रह जाता है। क्या राम, कृष्ण, गाँधी, लिंकन और पटेल आदि महापुरुषों ने अपनी संतानों को अपने से आगे ले जाने का प्रयास नहीं किया होगा? क्या गौतम, महावीर, शंकर एवं नानक ने अपने शिष्यों को अपना सारा ज्ञान एवं अनुभव नहीं दे दिया होगा? फिर भी इनकी संतान और शिष्य उस स्थान पर नहीं पहुँच पाए। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि बच्चे के विकास में हम एक निश्चित सीमा तक ही मदद कर सकते हैं।

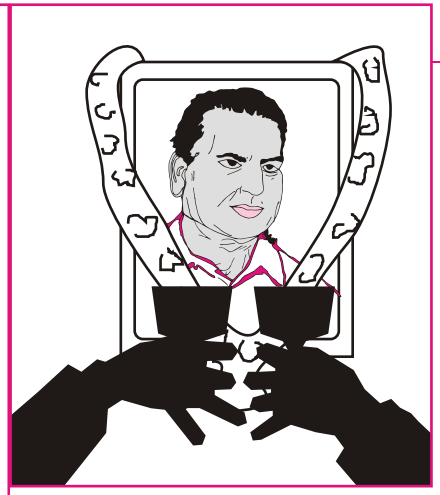

मृत्यु-उत्सव

जन्म एवं विवाह की तरह उचित समय पर होने वाली सुखद मृत्यु भी एक उत्सव है। मनुष्य के शुभचिन्तकों को उसकी मृत्यु के पश्चात् यह उत्सव मनाने का पूरा प्रयास करना चाहिए। स्वयं मनुष्य को भी श्रेष्ठ कर्म करते हुए इस प्रकार जीवन व्यतीत करना चाहिए कि अन्त में उसकी मृत्यु भी एक उत्सव बन जाए।

आभूषण

कार्य में पारदर्शिता, व्यवहार मे शालीनता, आदान–प्रदान में समभाव, स्पष्टवादिता, सटीक उत्तर देने की क्षमता, प्रगति की लालसा, सकारात्मक सोच आदि गुण किसी भी व्यक्ति के सदा बहार गुण हैं।

वास्तविकता

लोग उठते हुए व्यक्ति के साथ होते हैं, गिरते हुए के साथ कोई नहीं होता। यदि आप चाहते हैं कि लोग आपके साथ रहें तो हमेशा हँसिए, मुस्कराइए और निरंतर ऊपर उठने का प्रयास कीजिए। अगर कभी रोना भी पड़े तो अकेले में रोइए।

पितृ-कामना

कोई भी माता–पिता अपने जीवन में चाहे कितने भी सफल और महान विजेता रहे हों लेकिन अपनी संतान से हमेशा हारना पसंद करते हैं, अर्थात् संतान हर क्षेत्र में उनसे बढ़कर हो यही उनकी कामना रहती हैं। यही बात एक अध्यापक पर भी लागू होती है। एक अध्यापक भी सदैव चाहता है कि उसके शिष्य उससे बहुत आगे जाएँ। इसीलिए हमारे धार्मिक ग्रन्थों में मातृ देवो भव, पितृ देवो भव एवं आचार्य देवो भव लिखा है।

परम्परा

यदि आज हम मांसाहारी नहीं हैं और माँ तथा बहन के साथ अलग–अलग व्यवहार करते हैं, तो यह हमारे पूर्वजों द्वारा अनुभवों के आधार पर बनाई गई एक व्यवस्था है, जो हमारी परम्परा बन गई है। यह हमारे लिए कल्याणकारी रही है इसलिए इस पर लम्बे समय से स्वीकृति की मुहर लगती आ रही है।

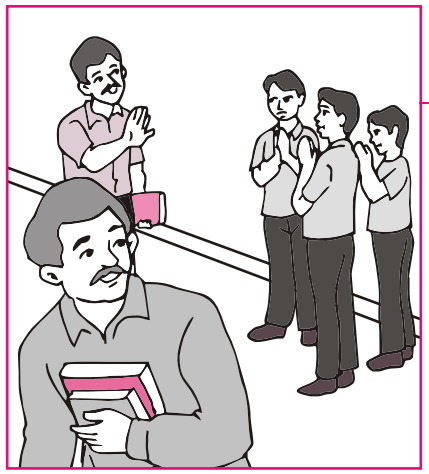

अध्यापक

किसी अध्यापक का महत्त्व इस बात में नहीं है कि उसने कितने बच्चे पढ़ाए, अपितु इस बात में है कि उसे कितने बच्चे पंसद करते हैं। वास्तव में छात्र ही शिक्षक का सच्चा मूल्यांकनकर्ता होता है।

जीवन-सूत्र

समस्या एवं संघर्ष जीवन के विभिन्न अंग हैं। इनसे रहित जीवन को वास्तविक जीवन नहीं कहा जा सकता। ''समस्या आएगी और मैं उसका समाधान करूँगा'' यह दृढ़ निश्चय ही सफल जीवन का एक महान सूत्र है।

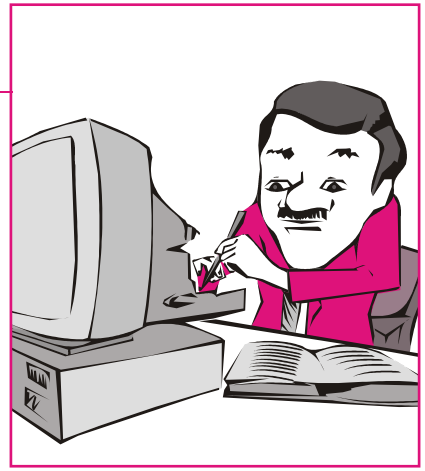

बदलता समय

बदलते हुए हालात से ऐसा लगता है कि हिन्दुओं की स्थिति दुनिया में यहूदियों जैसी हो जाएगी और इन्हें अपना अस्तित्व बचाने के लिए दूर–दूर भटकना पड़ेगा। वोट की राजनीति ने देश में अज़ीब हालात उत्पन्न कर दिए हैं।

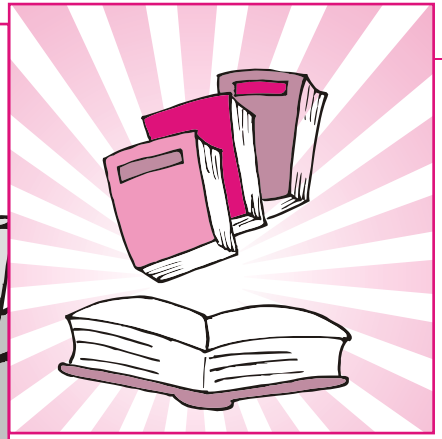

अनमोल धरोहर

साहित्य में महापुरुषों द्वारा अनुभूत जो जीवन निष्कर्ष सूत्रों के रूप में दिए गए हैं, वे विश्व की सर्वोत्तम और अनमोल धरोहर हैं। उन्हीं को सामान्य व्यक्ति कहावत या सूक्ति कहता है। वास्तव में वे सूत्र ही मनुष्य के मानसिक, आध्यात्मिक एवं शारीरिक प्रयत्नों का निचौड़ हैं।

संबंध

मनुष्य को कभी भी भावावेश में नए संबंध स्थापित नहीं करने चाहिए। उसे उन्हीं लोगों तक संबंध सीमित रखने चाहिए, जिनके साथ वह उन्हें अच्छी प्रकार निभा सकता है। रिश्तेदारी या जान–पहचान की जगह कभी भी लेन–देन, व्यापार, नौकरी या कोई नया रिश्ता नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसे में अधिकतर संबंध बिगड़ने की संभावना रहती है।

कटुसत्य

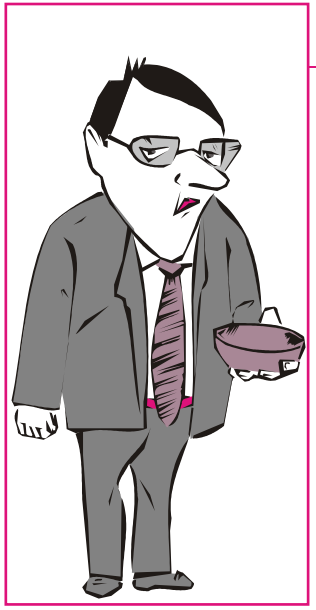

कोई मनुष्य जैसा सबको दिखाई देता है वास्तव में वह उससे बहुत नीचे होता है। यदि उसमें कोई छिपी हुई अच्छाई है, तो वह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उसे प्रकट करने का प्रयास करता है। परन्तु अपने द्वारा जाने–अनजाने में किए गए सभी गलत कार्यों को छिपाने का निरन्तर प्रयास करता है। उसके मित्र तथा सगे–संबंधी भी इस कार्य में उसकी मदद करते रहते हैं क्योंकि वे उसकी गलतियों को जानकर भी उन्हें सार्वजनिक करने में संकोच करते हैं।

सत्य

कोई भी बात तभी तक सत्य होती है जब तक उसकी प्रामाणिक काट तैयार नहीं हो जाती। पृथ्वी तभी तक अचल थी जब तक गैलीलियो ने सिद्ध नहीं कर दिया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर भी घूमती है तथा सूर्य के चारों ओर भी चक्कर लगाती है। अतः अंतिम सत्य क्या है, यह कहना एकदम संभव नहीं है।

आतिथ्य

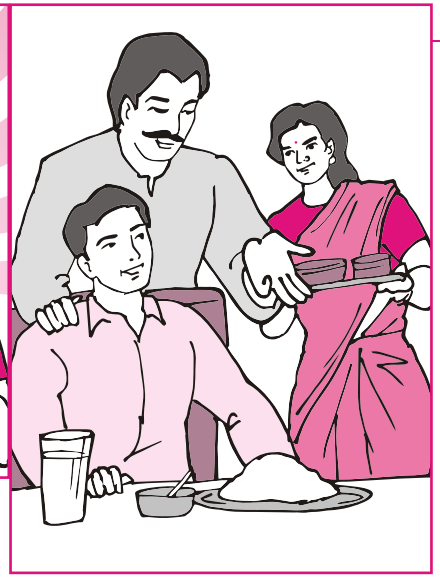

किसी परिचित, अतिथि या मित्र के आगमन पर प्रत्येक व्यक्ति उसके आतिथ्य में वही खाद्य व पेय सामग्री प्रस्तुत करता है जो उसे स्वयं प्रिय होती है। इससे उसकी दो प्रकार की मानसिकता का अनुमान लगाया जा सकता है – एक तो यह कि वह स्वयं भी उस आयोजन में सम्मिलित होगा तथा दूसरी यह कि आगन्तुक उसे स्वयं के समान प्रिय है अतः उसके लिए वह अपनी प्रिय वस्तु ही सत्कार में भेंट करता है।

दीर्घ जीवन

जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु भी निश्चित है, परन्तु मृत्यु की तिथि निश्चित नहीं है। इसको मनुष्य अपनी सूझ–बूझ, सावधानी एवं आहार–विहार से आगे–पीछे भी कर सकता है। यही बात दो या दो से अधिक व्यक्तियों के एक साथ मिलकर कार्य करने या साझेदारी पर भी लागू होती है, अर्थात् समझदारी से वे इस साझेदारी को लम्बे समय तक भी चला सकते हैं और नासमझी से उसे पलभर में भी तोड़ सकते हैं।

क्रोध

आप क्रोध तो कर सकते हैं लेकिन क्रोध के समय निष्क्रिय रहें। क्रोध स्मृति और बुद्धि दोनों को नष्ट कर देता है, अतः क्रोधावस्था में कुछ भी करते ही गलती होगी और गलती होने के बाद होगा पश्चात्ताप तथा पश्चात्ताप और हानि की कोई सीमा नहीं होती।

दृष्टिकोण

जिस व्यक्ति ने किसी उन्नत व्यक्ति के सामान्य प्रारंभ को देखा है वह सामान्यतः उस उन्नत व्यक्ति की प्रशंसा नहीं करता। यदि वह उसकी उन्नति को देखकर प्रसन्न है और उसकी प्रशंसा करता है तो यही उसकी सकारात्मक सोच है।

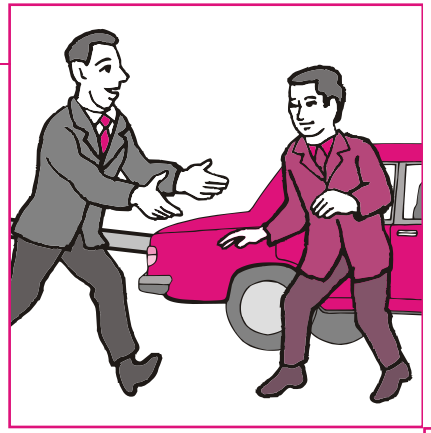

कारण

व्यक्ति के प्रत्येक व्यवहार के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है, भले ही उसे इसका पता न चले। उसके भिन्न–भिन्न व्यवहार का कारण भी भिन्न–भिन्न होता है, जैसे–कई बार मनुष्य का अपना अहम् और अज्ञानता उसकी मुसीबत का कारण होते हैं, तो कई बार उसे दूसरों के अज्ञान और अहम् के कारण भी कष्ट उठाने पड़ते हैं। कभी उसे परिस्थितियों के कारण दूसरों के सामने दबने के लिए विवश होना पड़ता है तो कभी विद्रोह भी करना पड़ता है।

कृतज्ञता

यदि सहायता प्राप्त व्यक्ति को सहायक का धन्यवाद करना आ जाए और उसके मन में कृतज्ञता की अनुभूति रहे, तो एक दिन वह भी सहायकों की श्रेणी में स्थित हो जाता है। लेकिन जब व्यक्ति सहायता प्राप्ति को अपना अधिकार मान लेता है तो समझ लीजिए कि उसने असहायों की यथास्थिति में ही रहना स्वीकार कर लिया है।

कर्तव्य

जिस कार्य को मनुष्य सहजभाव से बिना किसी संकोच के करता है वही उसका शुभ कर्तव्य है। कर्तव्य करते समय यह नहीं सोचना चाहिए कि लोग उसके विषय में क्या सोचते हैं और कैसी धारणा रखते हैं।

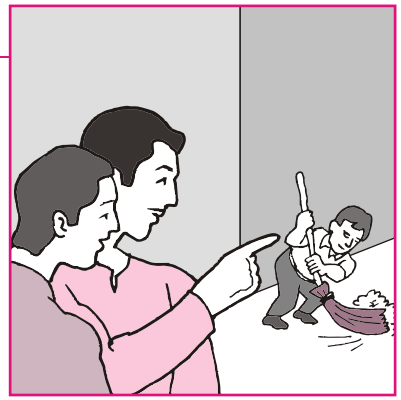

भाग्य और पुरुषार्थ

किसी समय यदि समान स्तर के दो व्यक्तियों में से एक उन्नति कर जाता है, तो दूसरा उसकी उन्नति का श्रेय भाग्य को देता है। दूसरी ओर उन्नत व्यक्ति उसका श्रेय पुरुषार्थ को देता है और कहता है कि यदि दूसरा व्यक्ति भी परिश्रम करता तो वह भी सब कुछ पा लेता।

सामंजस्य

व्यक्ति को अपने व्यवहार में सामंजस्य रखना चाहिए। उसके व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन में बहुत अन्तर होता है। उसे दोस्ती या रिश्तेदारी में केवल दोस्ती और रिश्तेदारी की ही बात करनी चाहिए, व्यावसायिक लेन–देन की नहीं। जो व्यक्ति इस सीमा का उल्लंघन करता है उसके संबंधों में ऐसी खटास आ जाती है जो उसे जीवन भर खटकती है। अतः मनुष्य को अपने व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत जीवन को अलग–अलग रखते हुए अपने विवेक से सामंजस्यपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

मानव मूल्यांकन

सामान्य रूप से मरणोपरान्त ही मनुष्य के गुणों को प्रकट किया जाता है। जीवित अवस्था में उसकी आलोचना होती है तथा लोग उसकी प्रशंसा करने से बचते हैं। मेरे विचार से इसका यह कारण भी हो सकता है कि जीवित अवस्था में मनुष्य से गलती होने की संभावना बनी रहती है, जबकि मृत्यु के बाद यह संभव नहीं है। मृत्यु के बाद लोगों की उसके प्रति श्रद्धा बढ़ती है क्योंकि वह कोई उत्तर–प्रत्युत्तर देने की स्थिति में भी नहीं होता।

मर्यादित जीवन

मनुष्य को व्यवस्थाओं में रहकर ही मर्यादित जीवन जीना चाहिए। इससे जीवन सरल, सुखद और सुगम बनता है। रास्ता भटकने पर पश्चात्ताप या आत्महत्या के अतिरिक्त यदि कुछ बचता है, तो वह है – समाज एवं कानून की प्रताड़ना और दण्ड।

दिनचर्या

प्रातःकाल उठते ही मनुष्य को उस दिन की सम्पूर्ण कार्य–योजना का मन में अच्छी प्रकार चिन्तन कर लेना चाहिए। इसी प्रकार रात्रि में भी सोने से पहले दिन भर में किए गए कार्यों का आकलन एवं विश्लेषण कर लेना चाहिए। एक व्यवस्थित दिनचर्या के अनुसार कार्य करने वाला व्यक्ति जीवन में निरन्तर सफलता प्राप्त करता है।

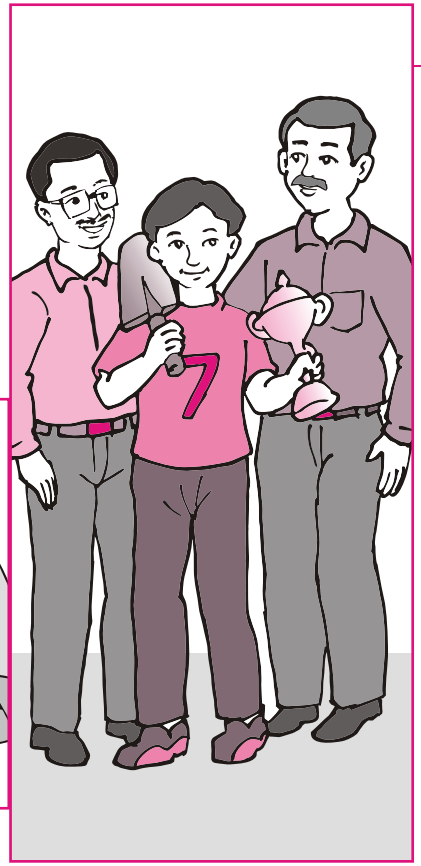

उन्नति के सोपान

मनुष्य की उन्नति में उसका अपना योगदान सबसे अधिक होता है। यदि उसमें प्रगति की तीव्र लालसा, जिज्ञासा एवं दृढ़ इच्छाशक्ति है, तो वह देर–सवेर उन्नति के शिखर पर पहुँच ही जाता है। उसका उत्साह, मनोबल, अन्तःप्रेरणा, परिस्थितियों में संघर्ष करने की क्षमता तथा उचित परिश्रम ही उसकी उन्नति के सोपान हैं। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य कारण भी हैं, जैसे–उचित शिक्षा, समय का सदुपयोग, उचित मार्गदर्शन एवं माता–पिता का योगदान आदि। ये अन्य कारण मैं इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि इनके अभाव में कई बार कुछ प्रतिभाएँ पूर्णतः विकसित नहीं हो पाती और समय से पहले ही मुरझा जाती हैं। गाँवों में भी प्रतिभाएँ हैं लेकिन उचित साधन और सुविधाएँ न होने से वे अपना प्रदर्शन नहीं कर पाती।

जीवन-दर्शन

जो व्यक्ति शारीरिक तथा मानसिक रूप से दुर्बल है और सभी उपलब्धियों को भाग्य के भरोसे छोड़ देता है, वह इस जीवन को दुःखमय मानता है। जो स्वयं को ऊपर उठाने के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं से संघर्ष करता है, वह जीवन को संघर्षमय मानता है। जो जीवन में संघर्ष करने के पश्चात् कुछ प्राप्त कर लेता है और जीवन का आनन्द लेता है, वह जीवन को आनन्दमय मानता है।

संस्कृति-संक्रमण

यदि ध्यानपूर्वक अतीत का अध्ययन और मनन किया जाए तो अनुभव होगा कि स्त्री की महत्ता पुरुष से अधिक रही है और रहेगी, परन्तु पश्चिमी सभ्यता के दिनोंदिन बढ़ते प्रभाव से विभिन्न जातियों, धर्मों एवं सम्प्रदायों से ग्रसित भारत में लड़कियों की स्थिति को लेकर एक विवाद छिड़ गया है। लिंग भेद एवं स्त्री–पुरुष के बढ़ते अनुपात के कारण इस समस्या का निकट भविष्य में कोई समाधान दिखाई नहीं देता। संस्कृतियों के इस टकराव में स्थिति और भी बिगड़ सकती है। अतः माता–पिता के लिए यही सलाह है कि जागरूक रहें और बच्चों के साथ मित्र एवं शुभचिंतक के समान व्यवहार करें तथा परिवार में व्यवस्था बनाए रखें। सरकार एवं संचार माध्यम तो आग में घी का काम करेंगे, क्योंकि सरकार में किसी व्यक्ति या समूह विशेष का कोई उत्तरदायित्व ही नहीं और मीडिया में केवल धन कमाने की होड़ है।

मेरा लक्ष्य

प्रकृति ने मुझे उत्पन्न किया है तो निश्चित रूप से पृथ्वी पर मेरी आवश्यकता थी। यदि ऐसा है तो अवश्य ही मैं महत्त्वपूर्ण हूँ। अब मेरा एक मात्र लक्ष्य यही है कि मैं प्रकृति द्वारा निश्चित किए गए अपने आगमन को और अधिक सार्थक और महत्त्वपूर्ण सिद्ध करूँ। इसके लिए मन, वचन और कर्म से जो भी शुभ कार्य मैं कर सकता हूँ अवश्य ही करूँगा। यही प्रकृति का आदेश है और इसी को सत्य सिद्ध करने के लिए मैं पूर्णतः कटिबद्ध हूँ।

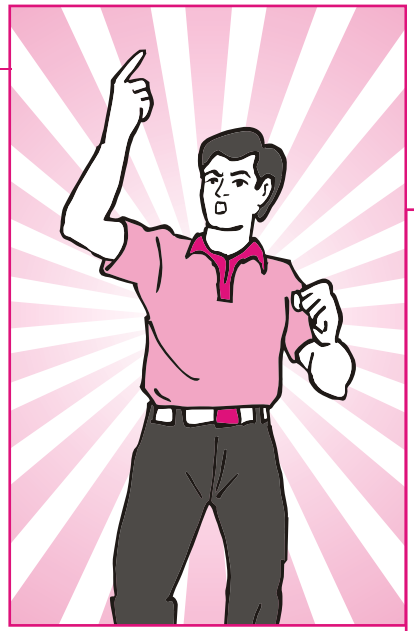

दुनिया (समाज)

दुनिया अच्छाई के साथ है, बुराई के नहीं। वह अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा कहती है तथा आपके सुख के साथ है दुख के नहीं। दुनिया आपके साथ हँसेगी, रोएगी नहीं। वह उसी को याद करती है जो उसके लिए कुछ करता है। उठने वाले को उठाना तथा गिरने वाले को गिराना उसका स्वभाव है। आप स्वयं को बदल सकते हैं, दुनिया को नहीं। वह किसी को भी गलती के लिए क्षमा नहीं करती। दुनिया यह भी कह देती है कि अमुक व्यक्ति के पास पैसा है तो क्या हुआ, पैसा तो वेश्या के पास भी होता है। इतना सब कुछ होते हुए भी यह सत्य है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा वह समाज के बिना रह भी नहीं सकता।

अच्छाई-बुराई

अच्छाई की एक सीमा है लेकिन बुराई की कोई सीमा नहीं। इसी प्रकार लाभ की सीमा है, हानि की कोई सीमा नहीं। यह नियम सभी सकारात्मक और नकारात्मक बातों पर लागू होता है। अर्थात् सकारात्मकता की सीमा होती है जबकि नकारात्मकता की कोई सीमा नहीं होती।

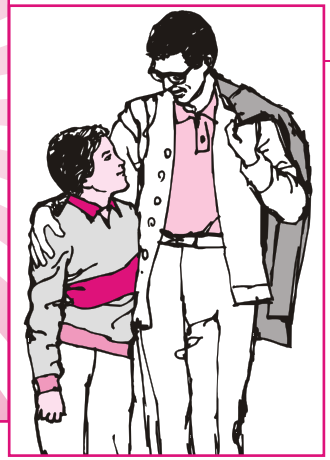

हितैषी-द्वेषी

मनुष्य की प्रगति से सबसे अधिक प्रसन्नता उसके माता–पिता और गुरुजनों को होती है, क्योंकि वे ही उसके सच्चे हितैषी होते हैं और उसकी प्रगति का श्रेय उन्हें भी मिलता है। इसके विपरीत उसकी प्रगति की सबसे अधिक ईर्ष्या उसके निकट संबंधी और पड़ोसी को होती है। उदाहरणार्थ– यदि दो समान स्तर के संबंधियों में एक आशातीत उन्नति करता है तो दूसरे को चुभन अवश्य होती है।

आध्यात्मिकता

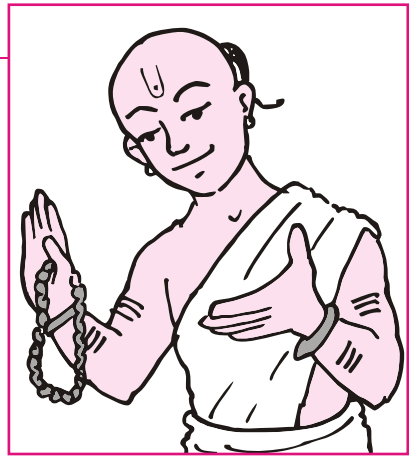

जन सामान्य द्वारा प्रयुक्त– मन, दिल एवं आत्मा तीनों मन की ही तीन स्थितियाँ हैं। हृदय तो केवल शरीर में रक्त का संचार करता है। अभी कुछ समय पहले डॉक्टरों ने एक लड़की को चार महीने बिना दिल के ही जीवित रखा। आत्मा भी काल्पनिक है। अतः दिल तथा आत्मा मन की ही दूसरी और तीसरी स्थितियाँ हैं।

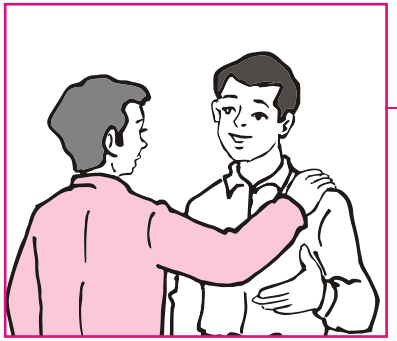

पहचान

बुद्धिमान व्यक्ति दूसरे के हाव–भाव व्यवहार एवं बोलचाल से ही उसके मनोभावों को भाँप लेते हैं और स्वभाव को भी जान लेते हैं।

पाप-पुण्य

बुरे कार्य का पाप मनुष्य को तभी लगता है, जब वह उसे जानते हुए भी करता है। एक व्यक्ति तांत्रिक के बहकावे में आकर किसी के प्राणों की बलि दे सकता है लेकिन यदि दूसरा व्यक्ति जानते हुए भी ऐसा गलत कार्य करता है तो वह निश्चित रूप से पापी है। यद्यपि न्यायालय तो दोनों को ही दण्ड देता है। गलत कार्य करने वाले के मन में विकृति अवश्य आ जाती है, भले ही उसे इसका दण्ड न मिले।

शब्दों का प्रयोग

समय, भाग्य एवं संयोग – ये सभी शब्द समानार्थक हैं। यदि अन्तर है तो इनका प्रयोग करने वालों में है। भाग्य शब्द का प्रयोग वे व्यक्ति करते हैं, जो स्वभाव से कमजोर होते हैं तथा जिनमें तर्क–वितर्क करने की सामर्थ्य नहीं होती। ऐसे व्यक्ति प्रत्येक कार्य को ईश्वर की इच्छा मानकर करते हैं। वे हर अच्छे कार्य का श्रेय तो स्वयं लेते हैं और बुरे कार्य का दोष ईश्वर को देते हैं। समय और संयोग शब्दों का प्रयोग ज्ञानी एवं तार्किक लोग करते हैं। ऐसे व्यक्ति हर अच्छे–बुरे कार्यों का परिणाम अपने ऊपर लेते हैं। यद्यपि इसमें दो मत नहीं हैं कि कभी–कभी मनुष्य को दूसरों के द्वारा किए गए कार्यों का परिणाम भी भोगना पड़ता है।

आलोचना

मनुष्य स्वभाव से ही स्वार्थी है। वह अपनी श्रेष्ठता का आकलन आवश्यकता से अधिक करता है। मुश्किल से एक प्रतिशत व्यक्ति ही अपनी आलोचना सामान्य भाव से सुन सकते हैं। उन एक प्रतिशत व्यक्तियों की श्रेणी में वे ही व्यक्ति आते हैं, जो बार–बार इस उक्ति पर चर्चा करते हैं और इसे स्वीकारते हैं।

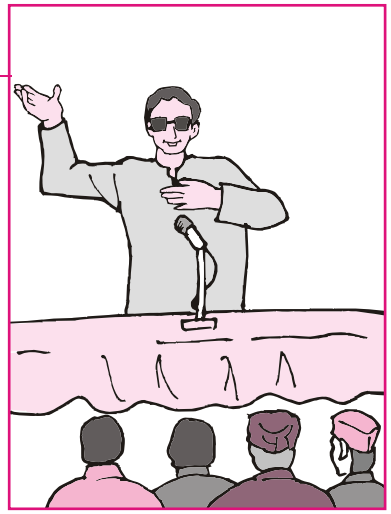

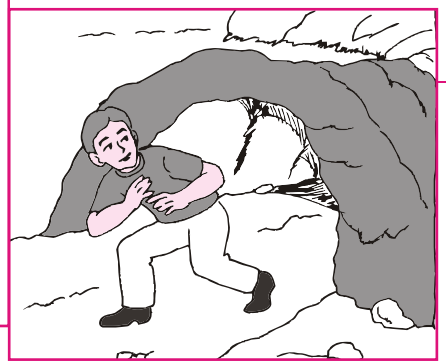

जीवन-कौशल

मनुष्य का जीवन किसी सुरंग या टेढ़ी–मेढ़ी और सँकरी टनल में से निकलने के समान है। जो व्यक्ति कम से कम चोट या रगड़ खाकर उससे पार हो जाता है, उसी का जीवन सफल है।

अपवाद

किसी विषय या वस्तु के बारे में यदि कोई बात चलती है तो इसका अर्थ यह है कि वह किसी न किसी रूप या स्थिति में अवश्य है। हम उसे एकदम नकार नहीं सकते। मनुष्य अपने प्रयास, बुद्धि और विवेक से उसको घटा–बढ़ा सकता है या बिल्कुल भी समाप्त कर सकता है।

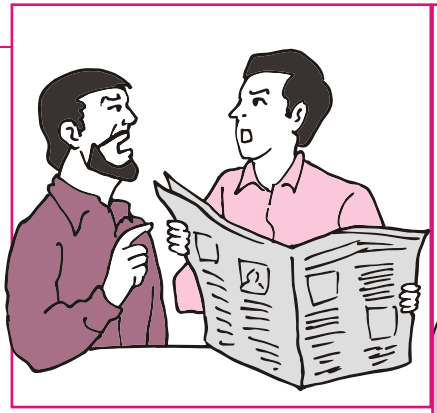

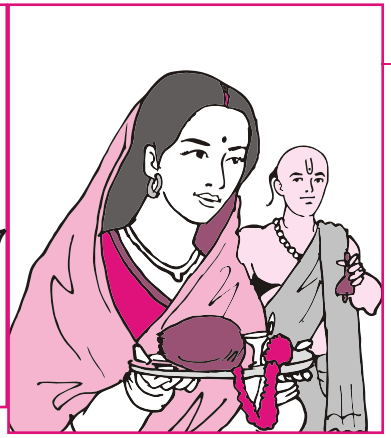

क्या कारण है?

क्या कारण है कि मंदिर के पुजारी से भक्त, अध्यापक से छात्र, प्रेरक से प्रेरित तथा डॉक्टर से रोगी बढ़कर होता है?

क्या कारण है कि मनुष्य विशेष में बहुत–सी प्राकृतिक विलक्षणताओं के होते हुए भी उसके चरित्र का विकास परिवार, जाति, समाज एवं देश के प्रभाव में ही होता है?

दण्ड और उपहार

कभी–कभी मनुष्य कोई गलती या अपराध किए बिना भी कष्ट या दण्ड भोगता है, यहाँ तक कि उसे जेल भी काटनी पड़ जाती है। उसके इस कष्ट की क्षति–पूर्ति इस बात से हो जाती है कि जीवन में अनेक बार उसकी गलतियाँ और अपराध जग उजागर नहीं हो पाते और वह उनका दण्ड भोगने से बच जाता है।

उपहार

यदि आप किसी को कोई वस्तु भेंट करना चाहते हैं तो उससे स्वीकृति लेकर उसके लिए उपयोगी वस्तु ही भेंट करनी चाहिए। कई बार व्यक्ति किसी को भेंट करने के लिए बहुमूल्य उपहार खरीद लेता है लेकिन जिसे वह दिया जा रहा है, उसे पसंद नहीं आता। ऐसी भेंट से प्राप्तकर्त्ता को तो कोई खुशी नहीं होती लेकिन भेंटकर्त्ता को हानि अवश्य होती है।

नियम पालन/सावधानी

वाहन दुर्घटनाएँ संसार में सबसे अधिक होती हैं। उन्हें पूर्णतः तो नहीं रोका जा सकता लेकिन कम अवश्य किया जा सकता है। यदि वाहन चालक यातायात के नियमों का पालन करे और सावधान होकर निश्चित गति सीमा में वाहन को चलाए तो ७५ प्रतिशत दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है।

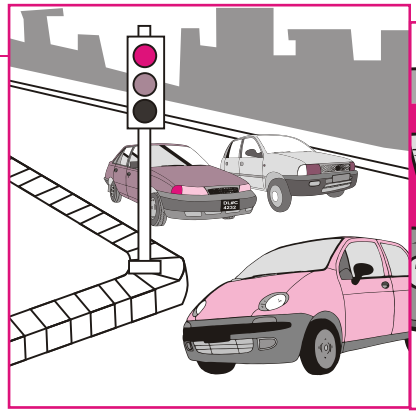

समय की गति

समय न दौड़ता है, न धीमी चाल चलता है बल्कि वह तो अपनी निश्चित गति से ही चलता है। वह कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। मनुष्य अपनी गति घटा–बढ़ा सकता है क्योंकि उसमें घटने–बढ़ने की क्षमता है। समय के साथ आगे बढ़ने में ही भलाई है।

आवेश

आवेश या क्रोध में लिए गए किसी भी निर्णय से हानि की ही संभावना होती है। क्रोध का आरम्भ मूर्खता से और अन्त पश्चात्ताप से होता है। इसके कारण होने वाली हानि और पश्चात्ताप की कोई सीमा नहीं है।

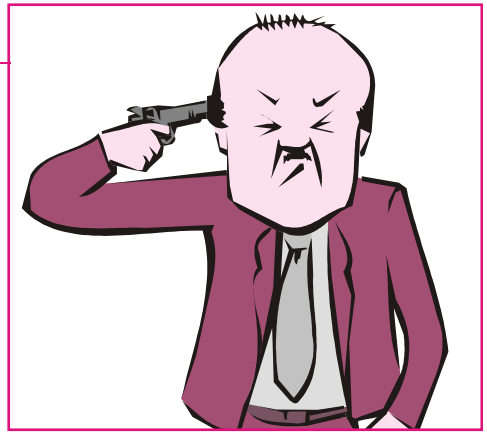

विरासत

प्रकृति ने कुछ कार्य अपने हाथ में रखे हैं और कुछ मनुष्य के लिए उसके विवेक पर छोड़ दिए हैं। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने कार्य क्षेत्र में जो कर सकता है, अवश्य करे। उसका धर्म है कि उसे प्रकृति या माता–पिता से जो भी मिला है, अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसमें अधिक से अधिक मिलाकर अगली पीढ़ी को सौंप दे। मनुष्य की मृत्यु के पश्चात् समाज उसके द्वारा किए गए कार्यों का ही मूल्यांकन करता है, उसके शरीर का नहीं।

संभाषण

किसी भी व्यक्ति को दूसरे से बात करते समय उसकी आयु एवं शिक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए। अधिकतर मनुष्य दूसरों से अपने ही स्तर पर बात करते हैं तथा उनसे भी वैसा ही करने की अपेक्षा रखते हैं। ऐसा व्यवहार किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है।

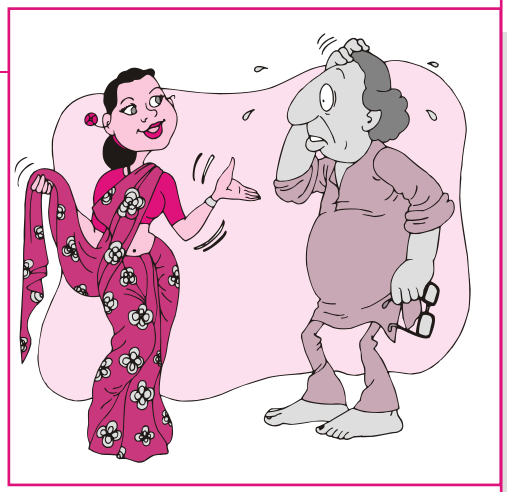

मन की शक्ति

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह – इन पाँचों का जन्म पहले मन में होता है और मन की ही आज्ञा से कर्मेन्द्रियाँ आगे बढ़ने के लिए प्रवृत्त होती हैं। कहने का अर्थ यह है कि कोई भी अच्छा या बुरा कार्य पहले विचार रूप में मन में ही उत्पन्न होता है।

देश-दशा

देश के हालात बदल रहे हैं। जहाँ जितने अधिक व्यक्ति काम करते हैं वहाँ उतनी ही अधिक समस्याएँ हैं। बड़े–बड़े कारखानों के चलाने वाले दुःखी हैं। जब नए–नए स्कूल खोलने वाले तंग हैं तो बड़े–बड़े विश्वविद्यालय चलाने वाले तो और भी अधिक तंग होंगे। जितना अधिक दिखावा है उतनी ही अधिक परेशानी है। भविष्य में सरकारी तन्त्र और भी अधिक निष्क्रिय होगा। बेकारी और महँगाई बढ़ रही है, उत्पादन और निर्यात घट रहा है। सब जगह उथल–पुथल मची है। देश संक्रमण काल से गुजर रहा है। मानसिक गुलामी आज भी विद्यमान है। देश की गिनती तीसरी दुनिया के देशों में होती है। ऐसे हालात में सँभलकर चलने में ही भलाई है।

अवस्था-भेद

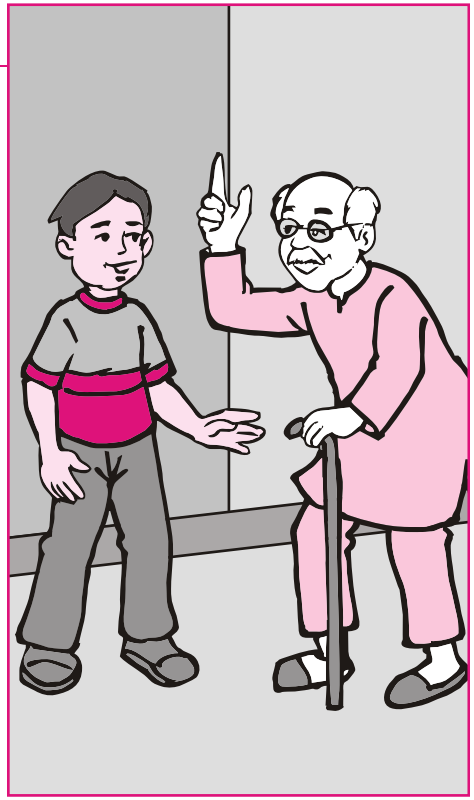

यदि एक वृद्ध या अनुभवी व्यक्ति किसी युवक या बच्चे को अपने बारे में बताता है कि उसे कम दिखाई देता है, या वह किसी भी बात या घटना को भूल जाता है तो उस युवक या बच्चे को इस वृद्ध व्यक्ति की बातों पर यकीन नहीं होता। दूसरी ओर, एक अनुभवी या वृद्ध व्यक्ति किसी युवक या बच्चे के न बताने पर भी उसकी मनः स्थिति को अच्छी तरह भाँप लेता है। इसका कारण यह है कि वह वृद्ध या अनुभवी व्यक्ति बचपन व युवावस्था से गुजर चुका होता है जबकि एक बच्चा या युवक वृद्धावस्था का कोई अनुभव नहीं रखता।

क्यों?

किसी भी घटना या कार्य के पीछे कोई न कोई कारण छिपा होता है। आज सभी प्रचार माध्यम चिल्ला–२ कर घटना का तो बखान करते हैं परन्तु कारण पर प्रकाश नहीं डालते। जब तक कारण पर चर्चा नहीं होगी या जब तक क्यों का उत्तर नहीं खोजा जाएगा तब तक समस्या सुलझ नहीं सकती। यह समस्या चाहे आतंकवाद की हो या नक्सलवाद की, बढ़ती हुई आबादी की हो या देश में फैले भ्रष्टाचार की।

सभी के लिए

- रात्रि में जल्दी सोना और प्रातः जल्दी उठना।
- अपने खान–पान और रहन–सहन को सादा रखना।
- द्वि–अर्थक वाक्य बोलने से बचना।
- अपनी रजाई के अनुसार ही पैर फैलाना।
- किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसके परिणाम पर ध्यान देना।
- हर विपरीत स्थिति को अपने अनुकूल करने का प्रयास करना।
- अपनी गलती की क्षमा माँगना और दुबारा वह गलती न करने का निश्चय करना।

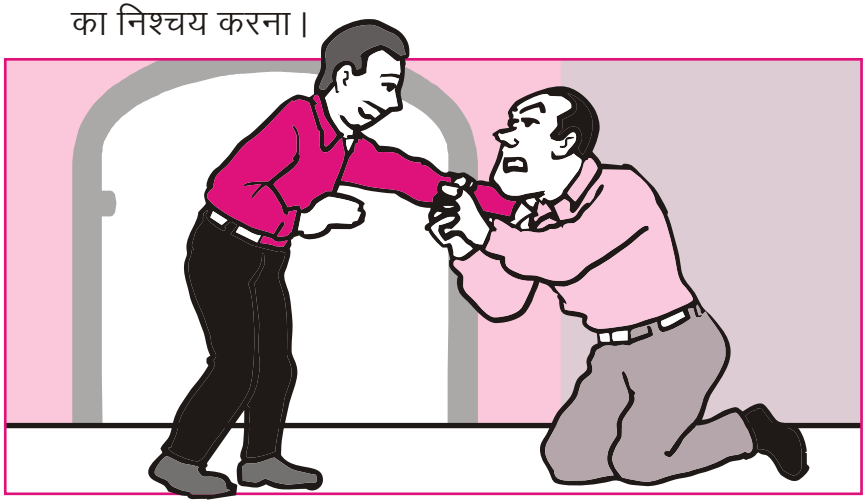

- किसी को वह काम करने के लिए न कहना जिसे स्वयं नहीं कर सकते।
- हमेशा अच्छे की कामना करना लेकिन बुरे के लिए भी तैयार रहना।
- सदा व्यवस्थाओं में रहना क्योंकि इनके टूटने पर हानि की कोई सीमा नहीं रहती।
- ऐसी कोई बात किसी के पीछे न कहना जिसे उसके मुँह पर नहीं कह सकते।

- अपनी बात कहते समय दूसरों को भी बोलने का अवसर देना।
- अपने कर्तव्य में कभी आलस्य न करना, उसके प्रति सदा सजग रहना।
- 'पहले आग लगाओ फिर बुझाओ' की प्रवृत्ति का त्याग करना।
- कोई भी फैसला लेने से पहले संबंधित व्यक्तियों से बात करना।

अनुभूत सूत्र

- अधिक दबाव से कोई भी या कुछ भी टूट जाता है।
- शरीर में यदि रक्त प्रवाह और श्वास–क्रिया ठीक है तो शरीर स्वस्थ है।
- जब शरीर स्वस्थ नहीं होता तब कुछ भी अच्छा नहीं लगता है।
- जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह सब व्यवस्थाओं पर खड़ा है। व्यवस्थाओं के चरमराने पर सब कुछ बिखर जाएगा।
- समाज सदैव व्यक्ति के कार्यों को आँकता है, शरीर या रहन–सहन को नहीं।
- निर्माण में युग लग जाते हैं लेकिन विनाश में एक पल भी नहीं लगता।

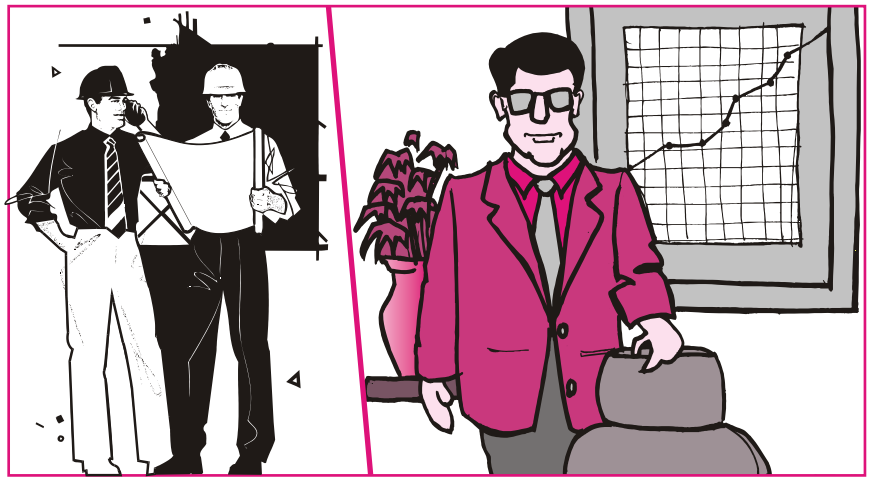

- दूसरों का सम्मान करने में ही अपना सम्मान है।
- सही दिशा और सही समय पर किया गया परिश्रम ही सफलता की कुंजी होता है।

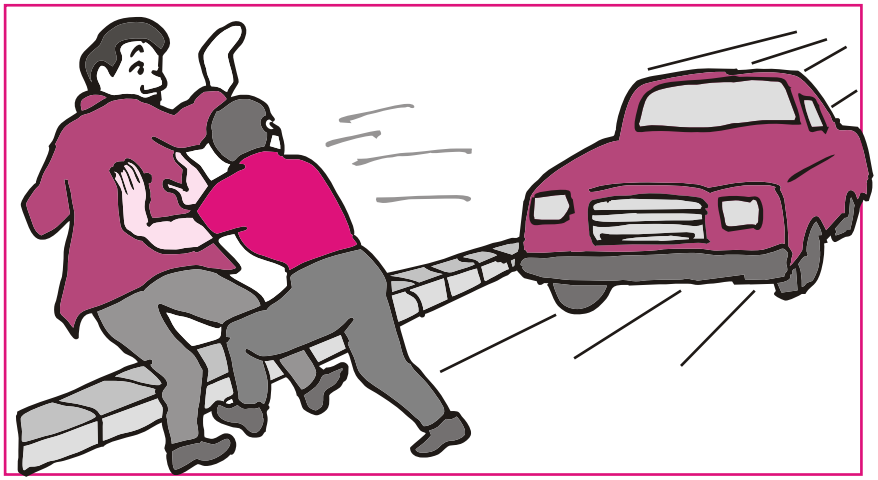

- सरपट दौड़ती इस दुनिया में सावधान होकर चलने में ही भलाई है।
- जीवन शतरंज का खेल है। मनुष्य को कभी हार नहीं माननी चाहिए क्योंकि इस खेल में चाल में से चाल निकलती है।
- संसार में प्रचलित सभी धर्म समय की माँग को देखकर मनुष्य द्वारा बनाए गए हैं, इसलिए इनमें समय–समय पर बदलाव की आवश्यकता है।
- प्रत्येक मुसीबत कुछ न कुछ सिखाती है, इसलिए उससे डरने की बजाय कुछ सीखना चाहिए।
- आयु की दृष्टि से जो एक व्यक्ति कल था वह आज नहीं है इस क्षति की पूर्ति कोई न कोई नई बात सीखकर ही की जा सकती है।

प्रेरक-सूत्र

- सदैव परिश्रम करूँगा – परिश्रम सफलता की कुंजी है।
- विद्या ग्रहण करूँगा – विद्या विहीन मनुष्य पशु के समान है।
- जीवन में संघर्ष करूँगा – संघर्ष से जीवन में निखार आता है।
- आशावादी बनूँगा – आशा ही जीवन है।
- सदैव सत्य बोलूँगा – सत्य ही ईश्वर है।
- आज का काम कल पर नहीं छोड़ूँगा – कल का कोई भरोसा नहीं तथा कल कभी नहीं आता।
- 'सादा जीवन उच्च विचार' का पालन करूँगा – सादगी सदाबहार होती है।
- जीवन में सामंजस्य रखूँगा – सामंजस्य जीवन की कला है।
- सदैव गुण ग्राही बनूँगा – गुणग्राहकता सफल जीवन का मूल मंत्र है।

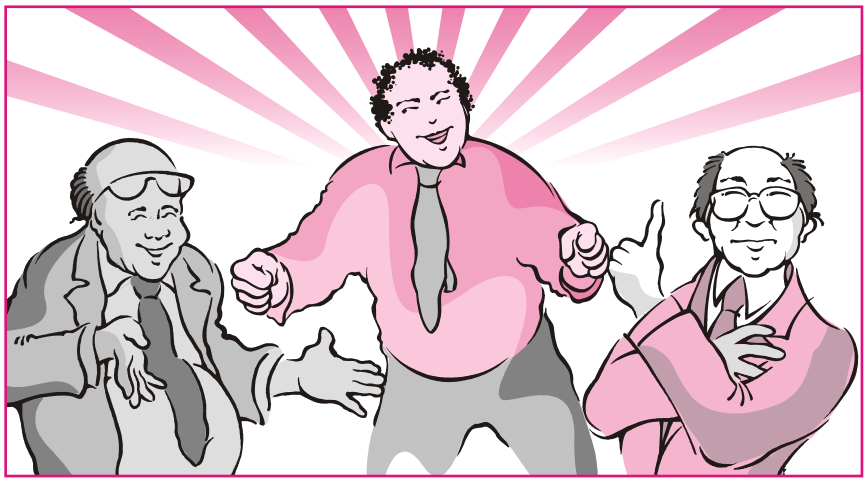

- भविष्य के लिए बचत करूँगा – भविष्यनिधि आपत्ति में सहायक होती है।
- साफ–स्वच्छ रहूँगा – स्वच्छता धर्म का लक्षण है।
- खान–पान पर नियंत्रण रखूँगा – अतिभोग ही रोग है।
- आवेश में कोई निर्णय नहीं लूँगा – बिना विचारे जो करे सो पाछे पछिताय।
- लेन–देन में ईमानदारी रखूँगा – ईमानदारी पर संसार टिका है।
- अपनी सामर्थ्य के अनुसार काम करूँगा – तेते पाँव पसारिए जेती लांबी सौर।
- सदा अपने कर्तव्य का पालन करूँगा – कर्तव्य पालन ही धर्म है।
- अपने मददगार की सेवा करूँगा – प्रत्युपकार ही मानवता है।
- अनावश्यक समस्याओं को जन्म नहीं दूँगा – एक समस्या से दूसरी पैदा होती है।
- सभी के साथ शालीनता का व्यवहार करूँगा – शालीनता मनुष्य का आभूषण है।
- समय के साथ स्वयं को बदलूँगा – दुराग्रही नष्ट हो जाता है।
- सकारात्मक दृष्टिकोण रखूँगा – सकारात्मकता सर्वहितकारी है।
- संसार को सुन्दर बनाने में योगदान दूँगा – संसार को सँवारना ईश्वर सेवा है।

मेरा देश : समस्या और समाधान

आज इस देश में त्यागी–तपस्वियों, साधु–सन्तों एवं तथाकथित ईमानदारों की भरमार है, परन्तु किसी में भी इतनी संवेदनशीलता नहीं कि वह देश में फैले भ्रष्टाचार, सरकारी तंत्र में फैली अकर्मण्यता, रिश्वत–खोरी एवं सभी क्षेत्रों में व्याप्त आपा धापी पर जरा भी उंगली उठा सके। ऐसा लगता है आज देश में संवेदनहीनता अपने चरम पर आ पहुँची है।

प्रत्येक देश, समुदाय एवं समाज का एक चरित्र है। हम आजादी के इतने वर्ष बाद भी अपने उस तथाकथित चरित्र को नहीं बदल पाए हैं। आपस में लड़ना तथा लड़ाई में बाहरी शक्तियों को आमंत्रित करना हमारे चरित्र में रच–बस गया है। हम विखण्डित हैं, विभाजित हैं तथा अपने–अपने घेरे में कुण्डली मारे बैठे हैं।

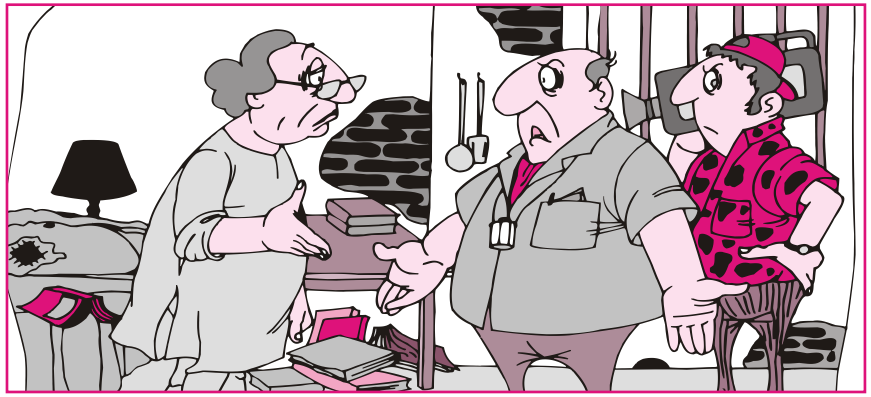

देश में समस्याएँ इतनी विकराल नहीं परन्तु हमने अपनी अज्ञानता एवं स्वार्थ हित में ऐसी बना रखी हैं। विभिन्न राजनीतिक दलों की ८० प्रतिशत ऊर्जा तो एक दूसरे की टाँग खींचने में ही खर्च हो जाती है, फिर उनका अपना निजी जीवन भी तो है।

आज देश की १० प्रतिशत जनता ही काम करती है तथा अपनी रोजी–रोटी कमाती है। शेष ९० प्रतिशत लोग इन्हीं पर निर्भर करते हैं। राजनीति, अफसरशाही एवं माफिया का एक ऐसा त्रिकोणीय फंदा तैयार हो चुका है कि कोई भी उभरती हुई मछली इस जाल में फँसे

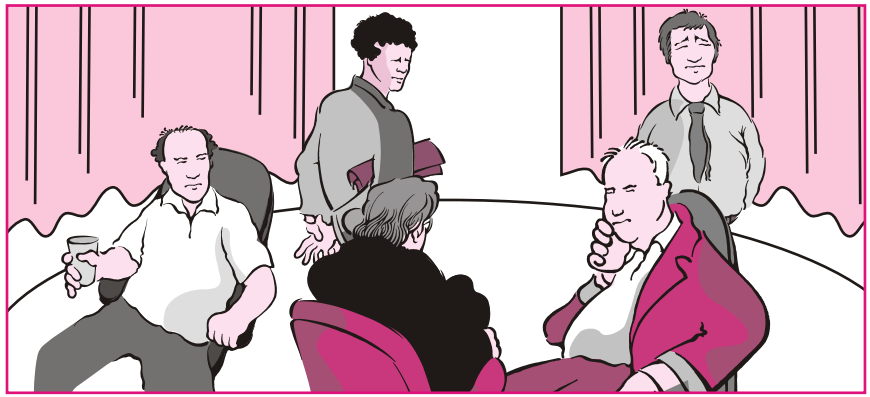

बगैर नहीं बच सकती। जो स्पर्धा–राजनीति के क्षेत्र में आज बन चुकी है वह न किसी व्यापार में है तथा न ही किसी बड़ी से बड़ी परीक्षा पास करने में है। कुछ ही लोग सत्ता पर काबिज हैं तथा यह एक वंशानुगत आकर्षक धंधा बन चुकी है।

हमारा यह भारत देश एक ऐसे शरीर की भाँति है जिसका ९० प्रतिशत हिस्सा एग्ज़िमा रोग से ग्रस्त है। ऐसे रुग्ण शरीर को कभी भी तथा किसी भी दृष्टि से स्वस्थ नहीं कहा जा सकता। हम अपने चेहरे पर कितना भी पाउडर क्यों न लपेटें बीमार ही रहेंगे। देश की ९५ प्रतिशत जनता को यही नहीं पता कि अपने इस देश में हो क्या रहा है तथा किसकी सरकार है। उन्हें मनुष्योचित सामान्य सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं और इसका परिणाम यह है कि गरीब एवं अमीर के मध्य का अन्तर बढ़ता जा रहा है। देश की बीमारी लाइलाज नहीं परन्तु सत्ता एवं विपक्ष में न तालमेल है, न इच्छाशक्ति तथा न ही काम करने के

प्रति ईमानदारी। देश उन्नति कर रहा है इसमें दो राय नहीं। परन्तु यह उन्नति सर्वांगीण नहीं। इसमें असन्तुलन है। आम आदमी की गरीबी धन बाँटने से नहीं, अपितु उसे काम देने से दूर होगी। लोगों को सस्ता अनाज नहीं काम चाहिए, सब्सिडी नहीं रोजगार चाहिए। यदि देश की जनता का बहुमत कार्य करने लगे तो गरीबी स्वतः ही भागने लगेगी।

लोगों को रोजगार सरकारी प्रतिष्ठान नहीं निजी प्रतिष्ठान देंगे। सरकार निजी प्रतिष्ठान खड़े करने में लोगों की मदद करे। कारण यह है कि इन कार्यों में किसी न किसी का हित जुड़ा है। इसके लाभ या हानि का असर सीधे किसी व्यक्ति विशेष पर पड़ता है। अतः ऐसे कार्यों में लाभ होगा, व्यवस्था होगी, उत्पादन बढ़ेगा, सरकारी तन्त्र को राहत मिलेगी, अपराधों पर लगाम लगेगी, कार्य की गति बढ़ेगी तथा समाज में भी शान्ति एवं अमन कायम होगा। कर–ढाँचा सरल हो, उसकी दर कम हो तथा यह सभी को देना पड़े। क्योंकि कर अधिक है अतः चोरी है, रिश्वत है, बेईमानी है तथा ईमानदारी भ्रष्टाचार के आटे में नमक की तरह हो चुकी है। सरकार स्वयं को केवल कानून बनाने एवं उसे लागू करने तक ही सीमित रखे।

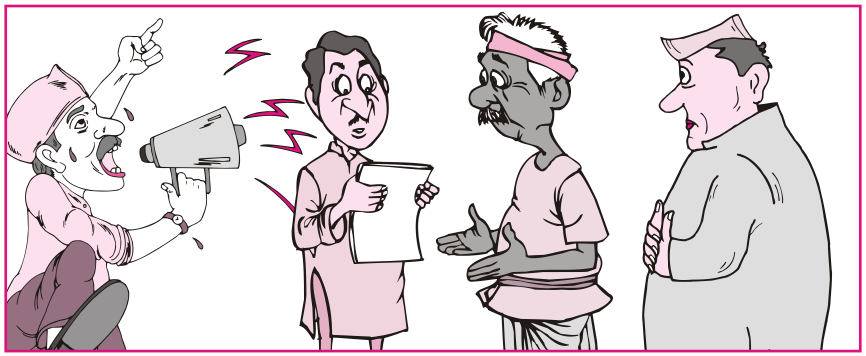

लोग अलग–अलग दिशाओं में अलग–अलग भाग रहे हैं। अतः देश की सर्वांगीण उन्नति का रथ जस का तस है। कोई यात्रा करने पर जुटा है तो कोई आरक्षण की रेवड़ी बाँटने में लगा हुआ है। गन्तव्य स्थान का दोनों में से किसी को भी नहीं पता और परिणाम – देश का दुर्भाग्य।

रोग-निदान

१ हम भारतवासी आज भी केवल शरीर से ही आज़ाद हैं मन से नहीं। हजारों वर्षों की गुलामी का मैल अभी भी हमारे अन्दर से छूट नहीं पाया है। हम मानसिक तौर पर ऐसी आज़ादी के काबिल नहीं हैं। कोई सख्त व्यक्ति–समूह ही, जिसके दिल में देश की बदहाली की पीड़ा है, इस अपने देश को उबार सकता है। देश रूपी इस शरीर को कई मेजर आप्रेशन्स की आवश्यकता है।

२ हम आज भी अनेकता की स्थिति में जी रहे हैं। किसी मामले में भी तो हम भारतवासी एक नहीं हैं। यहाँ हर कदम पर अनेकता है तथा हम विभिन्न दिशाओं में उद्देश्यहीन भाग रहे हैं। हमारी अधिकतर ऊर्जा लूट–पाट, आगजनी, तोड़–फोड़ एवं अन्य विनाशकारी क्रिया–कलापों में ही खर्च हो रही है।

३ मनुष्य १० प्रतिशत धन ही सही कार्यों में खर्च करता है तथा ६० प्रतिशत व्यर्थ जाता है।

४ इस देश में सभी के लिए काम करना जरूरी हो। जो काम नहीं करता उसे रोटी खाने का अधिकार न हो। देश में कार्य की कोई कमी नहीं है। जो कार्य मशीन नहीं कर सकती उसे मनुष्य ही करेगा। सभी राजमार्गो एवं रेलवे लाइन के दोनों ओर पौधे

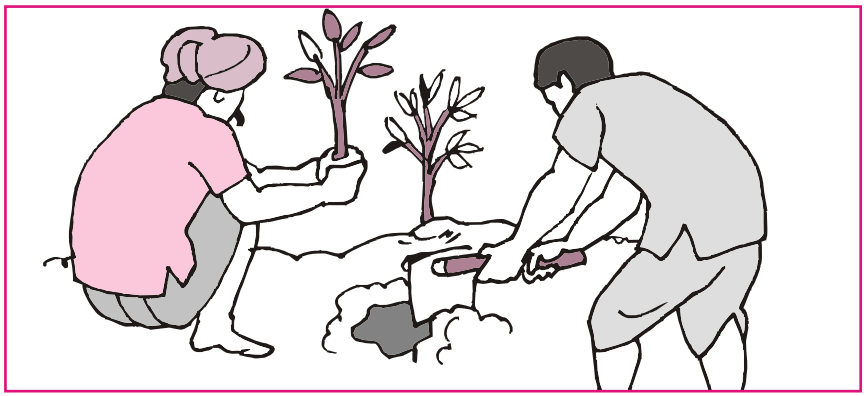

लगाने एवं उन्हें विकसित करने का काम मनुष्य ही कर सकते हैं।

५ सभी के लिए शिक्षा अनिवार्य हो, उसकी व्यवस्था की जा सकती है। आज सरकारी स्कूलों में पढ़ाई नाम को भी नहीं है। इन स्कूलों के अध्यापक बच्चों को बैठाकर बूढ़ा करते हैं।

६ सभी के लिए रोटी, कपड़ा व मकान अवश्य सुलभ हो। यह कार्य छोटी से छोटी आबादी की यूनिट को आधार मान कर ही संभव हो सकता है।

७ हम दो, हमारे दो का सिद्धांत अपनाकर देश में आबादी पर एकदम नियन्त्रण किया जाए। आज देश आबादी के नीचे दबा हुआ है तथा देश की प्रगति का रथ जस का तस है। इस देश में बच्चे प्लानिंग से नहीं By Chance पैदा होते हैं। देश के सभी महानगरों में हजारों बच्चे फ्लाई ओवर के नीचे, सीमेन्ट के पाइपों में तथा खुले में पैदा हो जाते हैं। इनका सरकार के पास कोई लेखा जोखा नहीं है।

७ इस देश में सभी के लिए एक प्रतिज्ञा हो "मैं पहले भारतीय हूँ तथा बाद में कुछ और।" धर्म एवं मजहब किसी का भी व्यक्तिगत मामला है तथा सरकार का उससे कोई लेना–देना नहीं है।

६ देश की सरकार की दृष्टि में मनुष्यों की एक ही जाति है, वह है– मनुष्य जाति और केवल मनुष्य जाति।

१० देश में दो ही तरह के व्यक्ति हैं – वे हैं भारतीय एवं विदेशी इसके अलावा अन्य कोई नहीं।

११ कोई भी अच्छाई एवं बुराई सदा ऊपर से आरम्भ होती है। अतः शुद्धीकरण ऊपर से आरम्भ होना चाहिए। अब पहल करने की प्रतीक्षा है।

१२ आर्थिक आधार पर समाज को चार श्रेणियों में बाँटा जाए। आरक्षण यदि है तो वह भी आर्थिक आधार पर ही हो, जाति के आधार पर नहीं।

१३ किसी सार्वजनिक स्थान पर सरकार की पूर्व अनुमति के बिना कोई जलसा–जुलूस नहीं होना चाहिए। आज देश की राजधानी दिल्ली आदमियों एवं वाहनों की भीड़ के नीचे दबी हुई है। कोई कहीं भी मजमा लगाकर खड़ा हो जाता है तथा सब कुछ जाम कर देता है।

१४ रात्रि में केवल दस बजे तक ही कोई होटल, दुकान या गार्डन आदि खुला रहे। विवाह में केवल १०० व्यक्ति ही एक जगह एकत्रित हों। कारण यह है कि अधिकतर अपराध रात्रि में ही होते हैं। जब भले व्यक्ति बिस्तर पर सोने के लिए चलते हैं तो

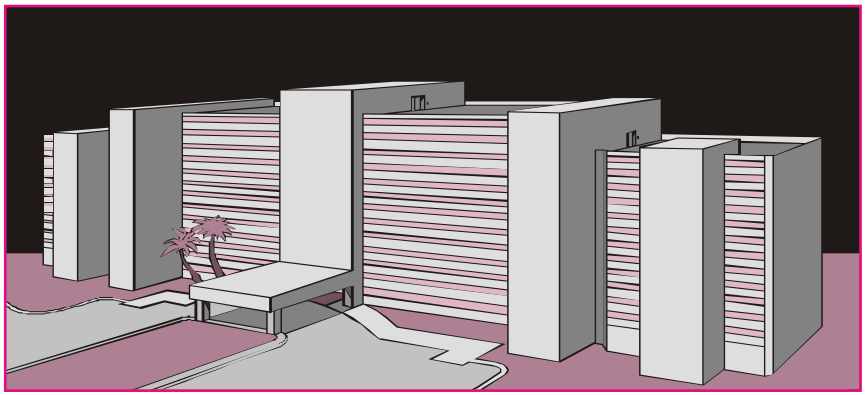

अपराधी वृत्ति के लोग अपना कार्य आरम्भ करते हैं। केवल महानगर दिल्ली में ही प्रति रात्रि क्विंटलों में ड्रग्स खप जाती है।

१५ शराब की दुकान केवल जिला स्तर पर ही हो, इससे नीचे नहीं, क्योंकि किसी बुरी चीज की सुलभता भी सामान्य व्यक्ति को सही रास्ते से भटकाती है और ऐसा इस देश में हर पल होता है।

१६ यदि कोई अपराधी है तो उसके घर पर भी सरकारी निगाह हो। कारण यह है कि अपराधी की गतिविधियों के बारे में परिवार को सबसे अधिक पता रहता है।

१७ देश की अदालतें सामान्य लोगों को ही न्याय दिलाने के लिए हैं। देश-द्रोहियों एवं घोर अपराधियों के लिए जिला स्तर पर फास्ट ट्रैक कोर्ट्स होनी चाहिए तथा किसी भी प्रकार के मुकदमे का फैसला छः महीने के अन्दर–अन्दर हो जाना चाहिए।

१८ पंचायतों को भी न्यायिक अधिकार मिलने चाहिए। जब किसी एम. पी. या एम. एल. ए. को वेतन मिलता है तो पंचायत के सदस्यों को भी मिलना चाहिए। कोई भी मुकदमा पहले पंचायत के पास जाए तथा वहाँ से होकर ही अदालत में जाए। इससे अदालतों का बोझ भी घटेगा तथा न्याय भी जल्दी मिलेगा।

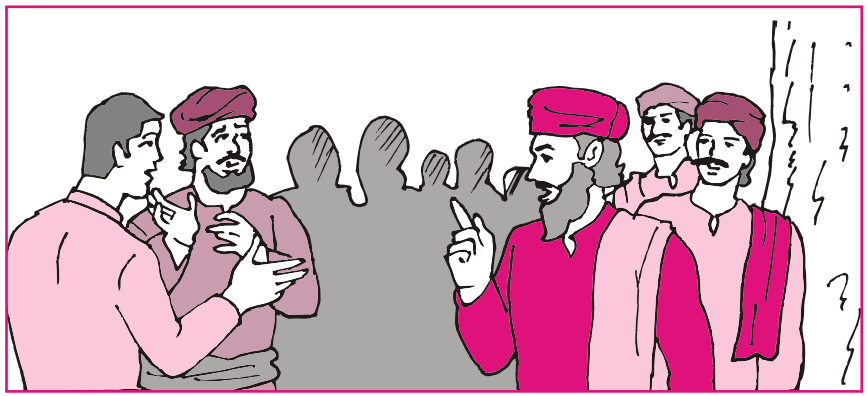

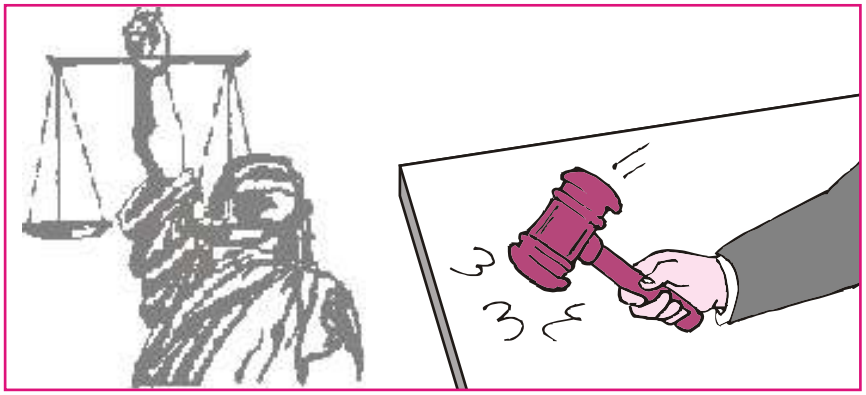

१९ कानून सामान्य आदमी के लिए है, पेशेवर अपराधी के लिए नहीं। उसे सरकारी मशीनरी ग़ैर कानूनी ढंग से भी खत्म कर सकती है।

२० किसी वाहन को खरीदने का अधिकार उसी व्यक्ति को मिलना चाहिए जो अपने घर में उस वाहन को खड़ा कर सके। आज सड़कों और गलियों में गाड़ियों की भरमार है तथा किसी बस्ती का सारा स्थान विशेष तौर से शहरों में पार्किंग का रूप ले चुका है।

२१ यदि कांग्रेस तथा बी. जे. पी. मिलकर इस देश की सरकार को चला लें तो देश के किसी भी व्यक्ति को क्या आपत्ति होगी। परन्तु यह तो तभी संभव होगा जब सम्बन्धित लोगों के दिल में देश की बदहाली को लेकर पीड़ा होगी। वे तो आज पूरी तरह संवेदनहीन हो चुके हैं।

२२ आज विश्व में हमारा कोई भी शत्रु नहीं है। असलियत यह है कि हमारी चहुँमुखी कमजोरी ही हमारी शत्रु है। गाँव में एक कहावत आम है तथा वह है – "तगड़े की जोरू सबकी दादी, कमजोर की जोरू सबकी भाभी।" हमारा यह भारत कमजोर नागरिकों का देश है। अतः कोई भी पड़ोसी कभी भी इसे उँगली लगा देता है तथा इसी की प्रतिक्रिया में हम भारतीय चिल्लाते हैं।

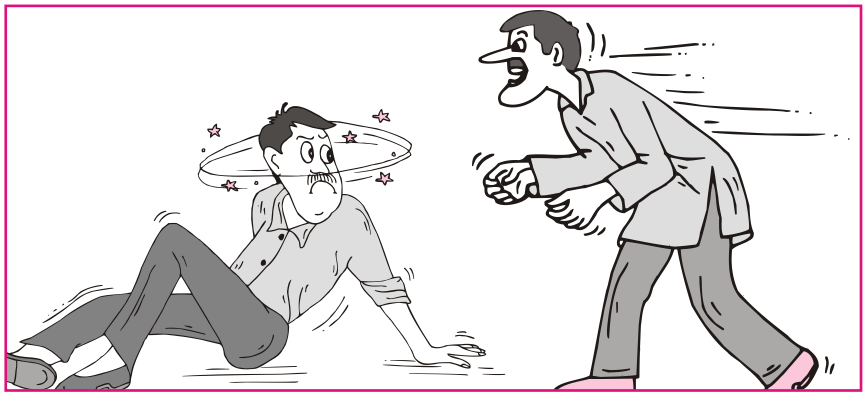

२३ आज कुशल नेतृत्व हीनता के फलस्वरूप देश के हालात सुधरने के बजाए और अधिक बिगड़ने की संभावना है। जो आज है वह कल नहीं रहेगा।

२४ देश की सरकार के हाथ में कानून बनाना, उसे लागू करना तथा शान्ति एवं व्यवस्था बनाए रखना ही हो, अन्य सभी कार्य निजी क्षेत्र में हों। सरकार केवल व्यवस्था एवं कानून बनाए रखने के लिए ही हो।

२५ किसी भी कार्य–क्षेत्र में निर्धारित वेतन अवश्य मिले परन्तु काम न करने वाले किसी भी कर्मचारी को कभी भी हटाने का अधिकार हो। जो जितने अधिक व्यक्तियों को रोजगार दे, उसे उतना ही अधिक प्रोत्साहन भी मिले।

२६ अब सभी समाचार पत्र एवं न्यूज चैनल आम नागरिकों को दुर्घटना, मौत, लूटपाट, आगजनी तथा धक्का–मुक्की की सूचना ही नहीं देते बल्कि आम आदमी के छक्के भी छुड़ाते हैं। परिणाम स्वरूप आम आदमी के कान पक चुके हैं तथा वह भी संवेदनहीनता की स्थिति में पहुँच चुका है।

क्षमा याचना के साथ

एस.के. शर्मा